हृदय रोग का कारक बैक्टीरिया

अमरीका के एक हृदय रोगी एडम्स की शल्यक्रिया के दौरान जब उनके खून की जांच की गई तो चिकित्सकों को कुछ चमकीले हरे बिन्दुओं के गुच्छे दिखाई दिए। ये चमकीले बिन्दु दरअसल *क्लैमायडिया न्यूमोर्नी* नामक बैक्टीरिया के थे जो क्लैमायडिया ट्रकोमेटिस की श्रेणी में आते हैं। इसी श्रेणी के बैक्टीरिया से गनोरिया नामक यौन रोग भी होता है।

वैसे तो 1965 में ही *क्लैमायडिया न्यूमोनी* का पता चल गया था लेकिन इसकी पुख्ता पहचान करीबन दस साल पहले हुई। यह बैक्टीरिया श्वसन सम्बंधी लगभग 10 प्रतिशत रोगों के लिए ज़िम्मेदार है। अब कुछ विशेषज्ञों ने यह साबित किया है कि इसका रोगाणु फेफड़ों से दिल तक जाता है, जिससे खून की नलियों में रुकावट आ जाती है और दिल का दौरा तक पड़ सकता है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय द्वारा हाल में किए एक अध्ययन से पता चला है कि यदि डॉक्टर हृदयरोगी को हुई अन्य बीमारियों के लक्षणों की भी जांच-पड़ताल कर लें तो आने वाले समय में वे दिल की बीमारियों के विषय में ज़्यादा सटीक भविष्यवाणी कर सकेंगे। चिकित्सकों को यह उम्मीद उक्त रोगाणु के कारण होने वाले हृदय रोग की वजह से बंधी है। उनका कहना है कि इस रोगाणु की रोकथाम के लिए एण्टीबायोटिक दवाएं ही काफी होंगी।

क्लैमायडिया न्यूमोनी का पता लगाने वाले वॉशिंग्टन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक टॉमस ग्रेस्टन के अनुसार यह बैक्टीरिया हर तरह के हृदयरोगों में अपनी भूमिका निभाता है, सिर्फ 10 से 15 प्रतिशत मामलों में ही नहीं जैसा अन्य वैज्ञानिकों का मानना है। 1985 में ग्रेस्टन को यही रोगाणु फिनलैण्ड में फ्लू के मरीज़ों के रक्त के नमूने में मिला। यह बैक्टीरिया खांसी एवं छींकों के माध्यम से दूसरों में प्रवेश करता है जिससे हल्का निमोनिया हो सकता है। विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि किसी व्यक्ति की रक्त वाहिनियों में रुकावट का कारण कोलेस्ट्रॉल हो या न हो, उनमें *क्लैमायडिया न्यूमोनी* की एण्टीबॉडीज़ होने की सम्भावना तो रहती ही है। दिल के रोगियों में तो इसका स्तर 25 प्रतिशत तक ज़्यादा होता है। जिनके खून में यह ज़्यादा मात्रा में पाया जाता है उनको हृदयरोग होने की सम्भावना दो गुनी होती है।

अध्ययनों से यह भी निष्कर्ष निकला है कि इस रोगाणु की एण्टीबॉडीज़ स्वस्थ लोगों की अपेक्षा उन लोगों में ज़्यादा होती हैं, जिनकी रक्त वाहिनियों में कोलेस्ट्रॉल के थक्के जमे होते हैं। ग्रेस्टन का यह भी कहना है कि यह रोगाणु बिना बीमारी

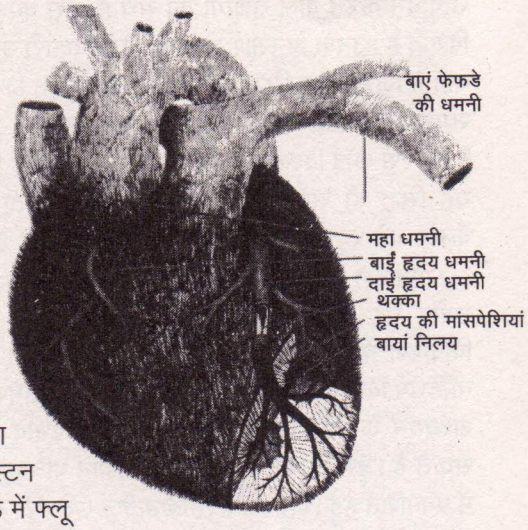

पैदा किए भी रह सकता है। कुल मिलाकर *क्लैमायडिया न्यूमोर्नी* कोई मामूली रोगाणु नहीं है। छोटे बच्चों पर भी इसका हमला बराबर होता रहता है। इसकी एण्टीबॉडीज़ कम से कम 50 साल तक शरीर में रहती हैं। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के हृदय चिकित्सक पॉल रिडकर का भी कहना है कि किसी भी आयु के लोग इस रोगाणु से होने वाली बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। *क्लैमायडिया न्यूमोर्नी* के रोगाणु जब सांस के साथ किसी व्यक्ति के शरीर में पहुंचते हैं, तो सुरक्षा कोशिकाओं के द्वारा निगले जाने के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं और पूरे शरीर में फैल जाते हैं। ये रोगाणु उन जगहों पर पहुंचते हैं जहां ज़ख्म आदि होते हैं या अधिक कोलेस्ट्रॉल जमा होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***

❖ ❖ ❖ ❖